P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-6* February- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

जयपुर जनपद में सांस्कृतिक पर्यटन का विकास

सारांश

वर्तमान में राजस्थान जैसे प्रतिकूल भौगोलिक परिस्थितियों वाले राज्य में पर्यटन क्षेत्र का विकास मुख्य रूप से सांस्कृतिक पर्यटन पर निर्भर करता है। जयपुर जनपद की समृद्ध सांस्कृतिक–धार्मिक विरासत सांस्कृतिक पर्यटन के विकास हेतु बेहतर संभावनाएँ प्रदान करती है। यह शोध पत्र जयपुर के प्रसिद्ध मंदिरों की सांस्कृतिक पर्यटन के विकास हेतु प्रासंगिकता पर प्रकाश डालता है। केन्द्र सरकार की महत्त्वाकांक्षी योजना 'स्वदेश दर्शन' के अन्तर्गत निर्धारित कृष्ण सर्किट के अन्तर्गत जयपुर के प्रसिद्ध मंदिरों और उनके परिसर के विकास को शामिल किया गया है। इस शोध पत्र हेतु अपनायी गयी शोध पद्धति में फील्ड सर्वे के दौरान आंकड़ों का संकलन और विश्लेषण शामिल है तथा मंदिरों से सम्बन्धित साहित्य, सरकारी दस्तावेजों से आंकड़ें प्राप्त किये गये हैं। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि सांस्कृतिक पर्यटन ने जयपुर जनपद में पर्यटन क्षेत्र में विविधता, गुणवत्ता और सतत्ता प्रदान की है साथ ही यहाँ की स्थानीय कला, संस्कृति और लोककलाकारों को प्रोत्साहित करके सांस्कृतिक विकास और पुनर्नवीनीकरण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है।

प्रवीण कुमार शर्मा
शोधार्थी,
भूगोल विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान

मुख्य शब्द : सांस्कृतिक पर्यटन, अभिगम्यता, सांस्कृतिक संधारणीयता, पर्यटन संभाव्यता, समग्र प्रभाव, धर्म–दर्शन।

प्रस्तावना

राजस्थान अपने गौरवपूर्ण इतिहास, विशिष्ट संस्कृति, प्राकृतिक सुषमा उच्च श्रेणी की शिल्पकलाओं से परिपूर्ण चतुरंगी महलों तथा मंदिरों के कारण पर्यटकों का प्रमुख आकर्षक केन्द्र रहा है। "अतिथि देवो भवः", "पधारो म्हारे देश", "रंगीलों राजस्थान" आदि शब्दों का इस वीरभोग्या वसुन्धरा में विशेष महत्त्व रहा है। राजस्थान राज्य की भौगोलिक विविधता ने सांस्कृतिक विविधता को उत्पन्न किया है। जयपुर जनपद की समृद्ध सांस्कृतिक–धार्मिक विरासत के कारण जयपुर को छोटी काशी भी कहा जाता है। प्रस्तुत शोधपत्र जयपुर जनपद के प्रसिद्ध मंदिरों की सांस्कृतिक पर्यटन के विकास हेतु प्रासंगिकता पर प्रकाश डालता है। सांस्कृतिक पर्यटन से तात्पर्य लोगों का अपने निवास स्थान से दूर सांस्कृतिक आकर्षणों की ओर गमन है ताकि वे अपनी सांस्कृतिक आवश्यकताओं की संतुष्टि के लिए नयी सूचना और अनुभव एकत्रित कर सके।

शोध–क्षेत्र

जयपुर जनपद राजस्थान के पूर्वी भाग में स्थित है। जयपुर जनपद $26^{0}22'$ एवं $27^{0}52'$ उत्तरी अक्षांशों एवं $74^{0}55'$ एवं $76^{0}50'$ पूर्वी देशांतरों के बीच स्थित है। जयपुर जिले का क्षेत्रफल 11,143 वर्ग कि.मी. है।

साहित्यावलोकन

जेवियर ग्रैफे - "Managing our cultural Heritage" (2002) यह पुस्तक कल्चरल हैरिटेज के आर्थिक आयाम और संभाव्यता का विवेचन करती है।

कृष्ण लाल एस.पी. गुप्ता, महुआ भट्टाचार्य - Cultural tourism in India Museums, monuments & Art (Theory and Practice), (2010) यह पुस्तक सभी बड़े तीर्थस्थलों और त्यौहारों का वर्णन करती है। यह पश्चिमी पर्यटकों का भारत के प्रति विशेष आकर्षण को बताती है, जो मुख्य रूप से भारतीय संस्कृति के उन पहलुओं में रूचि रखते हैं जो जीवन को शारीरिक, आध्यात्मिक, मानसिक और नैतिक स्तरों पर गहरी अभिव्यक्ति देते है।

डैलन जे तिमोथी –"Cultural Heritage and Tourism : An Introduction (Aspects of Tourism Texts)" (2011) यह पुस्तक पर्यटन मुद्दों, वर्तमान वाद– विवाद, संकल्पनाओं एवं परम्पराओं की व्यापक समीक्षा प्रदान करते हुए पर्यटन के विशाल रूप से संबंधित है।

डॉ. वनाजा उदय -Cultural tourism and performing arts of Andhra Pradesh: Prospects and Perspectives, (2012) यह पुस्तक अपने सात

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-5* ISSUE-6* February- 2018
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

अध्यायों में आंध्रप्रदेश में सांस्कृतिक पर्यटन और परफोर्मिंग आर्ट्स के विभिन्न पहलुओं को संग्रहित करती है।

विकी काटसोनी–"Cultural tourism in a digital era" first international conference IACuDIT, Athens, 2014 (2015) यह पुस्तक सांस्कृतिक पर्यटन के सम्पूर्ण दृश्य से कई उदाहरण प्रस्तुत करती है, सांस्कृ–तिक और डिजीटल पर्यटन में रणनीतियाँ और उभरते हुए उत्पाद प्रस्तुत करती है।

रजाक राज,केविन ग्रिफिन – Religious tourism and Pilgrimage Management An international perspective IInd Edition (2015) यह पुस्तक धार्मिक पर्यटन की केन्द्रीय भूमिका एवं तीर्थस्थलों के प्रबंधन के दूसरे पहलुओं के साथ इसके संबंधों की समीक्षा करती है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. मंदिरों के संदर्भ में सांस्कृतिक पर्यटन से सम्बन्धित संभावनाओं, सुविधाओं,समस्याओं का विश्लेषण करना।
2. मंदिरों का जयपुर जनपद की सांस्कृतिक संधारणीयता (Cultural Sustainability) में मूल्यांकन करना।
3. मंदिरों में सांस्कृतिक गतिविधियों, स्वच्छता का स्तर, आधुनिक प्रौद्योगिकी के प्रयोग को प्रोत्साहित करना।

परिकल्पनाएँ

जयपुर जनपद में मंदिरों में पर्यटक आगमन अभिगम्यता (Accessibility), धार्मिक महत्त्व या धर्म–दर्शन (Religion Philosophy), स्थापत्य, टूर–ऑपरेटर्स, ब्रांडिंग जैसे कारकों से प्रभावित होता है।

शोध प्रविधि

विषयवस्तु की जानकारी हेतु सर्वप्रथम पर्यटन सम्बन्धी साहित्य, ऐतिहासिक ग्रंथों के आधार पर जयपुर जनपद के मंदिरों का सर्वेक्षण किया गया है। इस दौरान स्तरीय यादृच्छिक समानुपातिक पद्धति (Stratified Random Proportional Sampling Method) से उचित प्रतिदर्श का चयन किया गया है। स्वदेशी पर्यटकों व विदेशी पर्यटकों प्रत्येक के प्रतिदर्श में 100–100 पर्यटकों का चयन किया गया है। पर्यटकों के प्रश्नावली व साक्षात्कार के माध्यम से प्राथमिक आँकड़ों का संकलन किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों हेतु सरकारी दस्तावेजों का प्रयोग किया गया है। इसके पश्चात् आँकडों का विश्लेषण कर परिकल्पनाओं की सम्पुष्टि की गयी है।

प्रस्तुत शोध पत्र हेतु निम्न छः प्रमुख मंदिरों का चयन किया गया है :–

बिरला मंदिर

यह लक्ष्मीनारायण का मंदिर है। इस मंदिर की स्थापत्य कला और अनूठी छवि दर्शनार्थियों को सहज ही आकर्षित करती है।

श्री गोविन्द देव जी मंदिर

वेदांत के गौडीय सम्प्रदाय का यह मंदिर पुराने जयपुर शहर के सिटी पैलेस के पीछे बने जयनिवास बगीचे के मध्य स्थित है। यहाँ वृन्दावन से लायी गयी गोविन्द देवजी की प्रतिमा प्रतिस्थापित की गयी।

गलता जी

तीर्थराज गलता जी जयपुर शहर की बाहरी सीमा पर अरावली की पहाड़ियों के बीच स्थित है यह 'मंकी वैली' के नाम से प्रसिद्ध है। यहाँ रामानन्दी सम्प्रदाय की पीठ, सूर्य मंदिर और प्राचीन पवित्र कुण्ड है।

जगत् शिरोमणी मंदिर, आमेर

यह आमेर राज्य का सबसे अधिक विख्यात एवं भव्य प्रासाद है। इस मंदिर के गर्भगृह में वही मूर्ति है जिसकी मीरा आराधना किया करती थी।

आमेर की शिलादेवी का मंदिर

आमेर के राजप्रासाद के जलेब चौक के दक्षिण–पश्चिम कोने में शिलादेवी का मंदिर है।

मोती डूंगरी के गणेश जी

जवाहर लाल नेहरू मार्ग पर मोती डूंगरी की तलहटी में गणेश जी का मंदिर स्थित है।

इन मंदिरों की अवस्थिति मानचित्र संख्या–1 में प्रदर्शित की गयी है।

मानचित्र संख्या 1

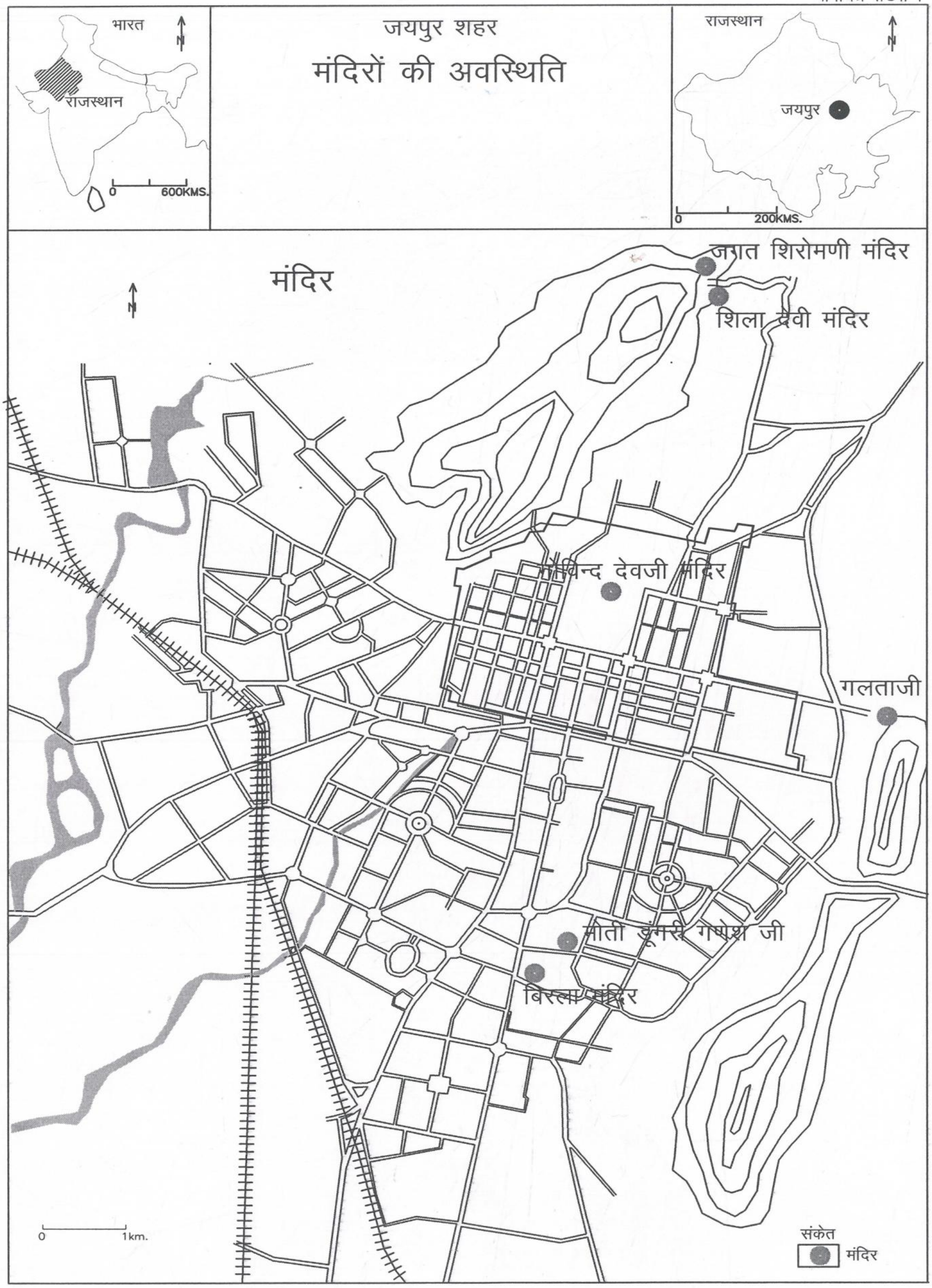
भारत
राजस्थान
0
600KMS.
जयपुर शहर
मंदिरों की अवस्थिति
राजस्थान
जयपुर
0
200KMS.
मंदिर
शिला देवी मंदिर
गलताजी
बिरला मंदिर
0
1km.
संकेत
मंदिर

जयपुर व जयपुर के प्रमुख मंदिरों में आये पर्यटकों का वर्षवार तुलनात्मक विवरण

पर्यटन स्थल	जयपुर		बिरला मंदिर		गोविन्द देवजी मंदिर		मोती डूंगरी गणेश जी		शिला माता मंदिर		गलता जी मंदिर		जगत शिरोमणी मंदिर	
वर्ष	**देशी**	**विदेशी**	**देशी**	**विदेशी**	**देशी**	**विदेशी**	**देशी**	**विदेशी**	**देशी**	**विदेशी**	**देशी**	**विदेशी**	**देशी**	**विदेशी**
2011	1035885	416824	331252	104224	133144	26010	103411	842	78176	7206	39611	11849	7114	3612
2012	998703	534256	336121	101968	146251	25218	111219	688	74216	7429	42768	12260	7467	3922
2013	1104905	566429	341168	112383	153782	27332	121612	920	79763	7751	44309	13169	7627	4006
2014	1170152	568234	351602	116429	158508	26452	131913	861	80161	7877	48882	13996	7813	4418
2015	1201152	596756	382161	122147	169331	28118	138109	901	81323	7624	52102	14100	8129	4668
माध्य			350061	111430	152201	26626	121253	842	78728	7577	45534	13075	7630	4125

स्रोत : 1. राजस्थान पर्यटन विभाग प्रगति प्रतिवेदन 2015–16 (जयपुर में पर्यटक आगमन हेतु)
2. फील्ड सर्वे (मंदिरों में पर्यटक आगमन हेतु)

माध्य = कुल पर्यटक/वर्षों की संख्या

जयपुर के प्रमुख मंदिरों में आये पर्यटकों की संख्या (माध्य) को प्रदर्शित करते हुए दण्ड आरेख (Bar Diagram)

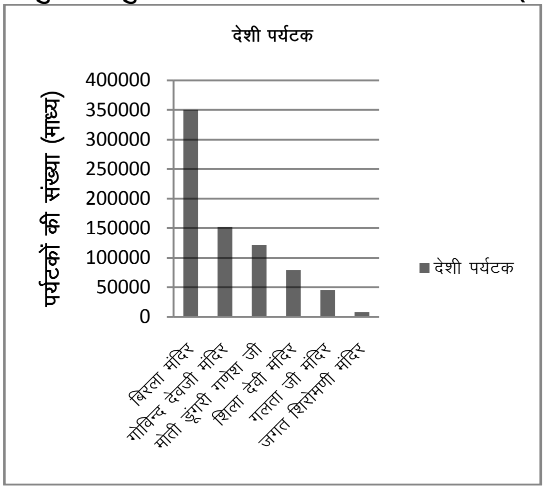

मानचित्र संख्या–2

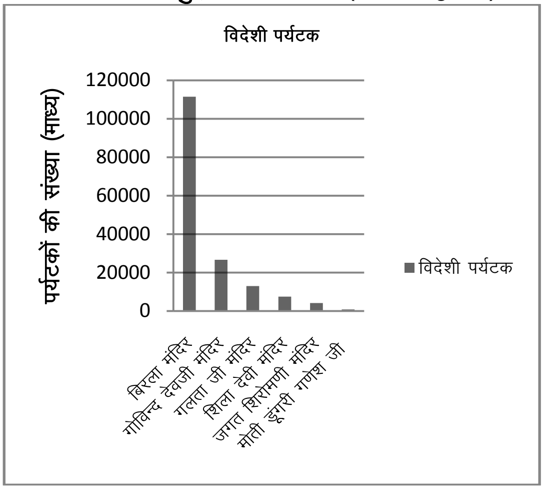

मानचित्र संख्या–3

पर्यटकों के प्रश्नावली, साक्षात्कार के आधार पर मंदिरों में पर्यटक आगमन को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान की गयी है और कारकों को उनके प्रभाव के आधार पर चार वर्गों उच्च, मध्यम, निम्न परास (Range) व शून्य (0) में वर्गीकृत किया गया है।

(1) उच्च – 7–9 अंक
(2) मध्यम – 4–6 अंक
(3) निम्न – 1–3 अंक
(4) शून्य – 0 अंक

अंत में प्रत्येक मंदिर हेतु कारकों के समग्र प्रभाव (Composite Effect) को ज्ञात कर पर्यटक आगमन से तुलना की गई है। इन कारकों का विवरण निम्नानुसार है:–

अभिगम्यता (Accessibility)

इसके अन्तर्गत तीन कारक मंदिर की अवस्थिति (मैदानी क्षेत्र या पहाड़ी, निकटस्थ या दूरस्थ), सड़क से जुड़ाव, यातायात के साधनों की उपलब्धता शामिल किये गये है।

धार्मिक महत्त्व/धर्म–दर्शन

इसकें अंतर्गत स्वदेशी व विदेशी पर्यटकों की धार्मिक महत्त्व या धर्म–दर्शन से सम्बन्धित रूचि को शामिल किया गया है।

टूर ऑपरेटर्स के कार्यक्रम में उपलब्धता

इसके अन्तर्गत सम्बन्धित मंदिर टूर ऑपरेटर्स के कार्यक्रम में शामिल है या नहीं, विषय को शामिल किया गया है।

स्थापत्य

मंदिरों का स्थापत्य विशेषकर प्राचीन उत्तर भारतीय मंदिर शैली या मंदिर निर्माण में अन्य कोई विशेष स्थापत्य से सम्बन्धित बिन्दु को शामिल किया गया है।

ब्रांडिंग

इसके अंतर्गत सरकारी वेबसाइट्स, सरकारी प्रचार–प्रसार, प्राइवेट वेबसाइट्स, मंदिरों की अपनी वेबसाइट जैसे कारकों को शामिल किया गया हैं।

मंदिरों में स्वदेशी पर्यटकों के आगमन को प्रभावित करने वाले कारकों का प्रभाव अनुसार वर्गीकरण

क्र.स.	कारक	बिरला मंदिर	गोविन्द देव जी मंदिर	मोती डूंगरी के गणेश जी मंदिर	शिलादेवी मंदिर	गलता जी मंदिर	जगत शिरोमणी मंदिर
1.	अभिगम्यता	8	5	8	4	3	3
2.	धार्मिक महत्त्व	8	8	8	2	7	4
3.	टूर–ऑपरेटर्स के कार्यक्रम में उपलब्धता	8	6	6	3	5	2
4.	स्थापत्य	8	2	1	0	6	8
5.	ब्रांडिंग	8	8	2	1	3	1
	समग्र प्रभाव	40	29	25	10	24	18

मंदिरों में विदेशी पर्यटकों के आगमन को प्रभावित करने वाले कारकों का प्रभाव अनुसार वर्गीकरण

क्र.स.	कारक	बिरला मंदिर	गोविन्द देव जी मंदिर	मोती डूंगरी के गणेश जी मंदिर	शिलादेवी मंदिर	गलता जी मंदिर	जगत शिरोमणी मंदिर
1.	अभिगम्यता	8	5	8	4	3	3
2.	धर्म–दर्शन	8	8	1	1	3	3
3.	टूर–ऑपरेटर्स के कार्यक्रम में उपलब्धता	8	5	1	2	4	2
4.	स्थापत्य	8	2	1	0	6	8
5.	ब्रांडिंग	8	8	2	1	3	1
	समग्र प्रभाव	40	28	13	8	19	17

मंदिरों में पर्यटक आगमन को प्रभावित करने वाले कारकों के समग्र प्रभाव को दर्शाते हुए दण्ड आरेख

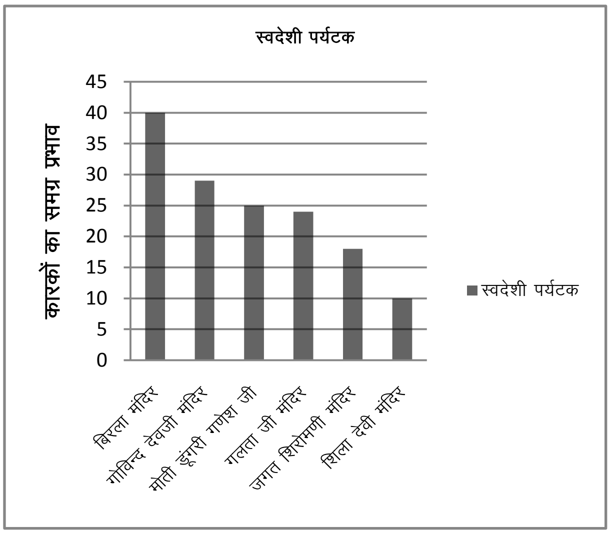

मानचित्र संख्या–4

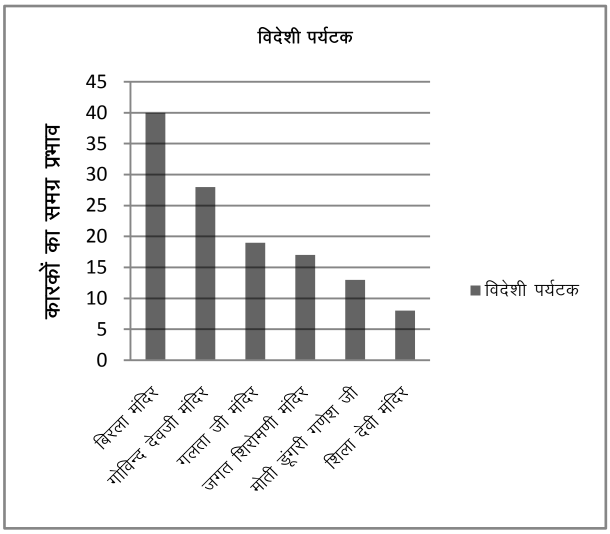

मानचित्र संख्या–5

मंदिरों में पर्यटक आगमन को प्रभावित करने वाले कारकों के समग्र प्रभाव का मंदिरों में पर्यटक आगमन से तुलनात्मक विश्लेषण

स्वदेशी पर्यटकों के संदर्भ में

प्रत्येक मंदिर के संदर्भ में कारकों का समग्र प्रभाव (Composite effect) ज्ञात करने पर मंदिरों का निम्नानुसार क्रम मिलता है :– बिरला मंदिर > गोविन्द देव जी का मंदिर > मोती डूंगरी के गणेश जी का मंदिर > गलता जी मंदिर > जगत शिरोमणी मंदिर > शिलादेवी। (मानचित्र संख्या–4)

परन्तु इन्हीं मंदिरों में पर्यटक आगमन का क्रम निम्नानुसार है :– बिरला मंदिर > गोविन्द देव जी का मंदिर > मोती डूंगरी के गणेश जी का मंदिर > शिलादेवी मंदिर > गलता जी मंदिर > जंगत शिरोमणी का मंदिर। (मानचित्र संख्या–2)

विदेशी पर्यटकों के संदर्भ में

कारकों के समग्र प्रभाव के अनुसार मंदिरों का क्रम : बिरला मंदिर > गोविन्द देव जी का मंदिर > गलता जी मंदिर > जगत शिरोमणी मंदिर > मोती डूंगरी गणेश जी मंदिर > शिलादेवी मंदिर। (मानचित्र संख्या–5) इन

मंदिरों में विदेशी पर्यटक आगमन का क्रम निम्नानुसार है :– बिरला मंदिर > गोविन्द देव जी का मंदिर > गलता जी मंदिर > शिलादेवी मंदिर > जंगत शिरोमणी का मंदिर > मोती डूंगरी के गणेश जी का मंदिर। (मानचित्र संख्या–3)

उपर्युक्त तुलनात्मक विश्लेषण के अनुसार प्रथम तीन मंदिरों में स्वदेशी और विदेशी पर्यटक आगमन कारकों के समग्र प्रभाव के अनुसार ही है परन्तु अंतिम तीन मंदिरों में यहाँ विचलन पाया जाता है। स्वदेशी पर्यटकों के संदर्भ में गलता जी हेतु कारकों का समग्र प्रभाव शिलादेवी मंदिर की अपेक्षा ज्यादा है परन्तु गलता जी मंदिर की शहर की बाहरी सीमा पर अवस्थिति, शहर से एक सड़क से जुड़ाव, यातायात के साधनों की कमी होने के कारण यहाँ पर्यटक शिलादेवी मंदिर की अपेक्षा कम आते है। वही शिलादेवी मंदिर की अवस्थिति आमेर के किले में होने के कारण आमेर के किले का भ्रमण करने वाले पर्यटक इस मंदिर का भी भ्रमण करते है। विदेशी पर्यटकों के संदर्भ में जगत् शिरोमणी मंदिर हेतु कारकों का समग्र प्रभाव शिलादेवी की अपेक्षा ज्यादा है परन्तु प्रचार–प्रसार का अभाव व गाइडों की कम रूचि के कारण यहाँ शिलादेवी की अपेक्षा पर्यटक आगमन कम है इसी तरह मोती डूंगरी के गणेशजी मंदिर हेतु भी कारकों का समग्र प्रभाव शिलादेवी मंदिर की अपेक्षा ज्यादा है परन्तु पर्यटक आगमन कम हैं क्योंकि विदेशी पर्यटकों की वैष्णववाद विशेषकर श्रीकृष्ण के मंदिरों में रूचि अपेक्षाकृत ज्यादा है तथा विदेशी पर्यटकों हेतु टूर ऑपरेटर्स के प्रोग्राम में इसकी उपलब्धता बहुत कम है। जबकि शिलादेवी मंदिर की आमेर के किले में अवस्थिति पर्यटक आगमन की दृष्टि से इसे लाभ प्रदान करती है।

जयपुर के प्रसिद्ध मंदिरों का सांस्कृतिक पर्यटन के विकास की दृष्टि से तुलनात्मक विश्लेषण

बिरला मंदिर

जयपुर शहर के मध्य में इसकी अवस्थिति, एयरपोर्ट की नजदीकी, यातायात के साधनों से जुड़ाव पर्यटकों हेतु इसे अधिक अभिगम्य बनाती है। इस लक्ष्मीनारायण के मंदिर का स्थापत्य प्राचीन उत्तर भारतीय मंदिर शैली को प्रदर्शित करता है। यह अधिकांश टूर–ऑपरेटर्स के कार्यक्रम में स्वदेशी एवं विदेशी दोनों प्रकार के पर्यटकों हेतु उपलब्ध है। इस मंदिर की ब्रांडिंग सरकारी वेबसाईटों के माध्यम से भी होती है। भारत के अन्य शहरों जैसे दिल्ली, हैदराबाद में भी बिरला मंदिर होने के कारण इस मंदिर के प्रति पर्यटकों में एक आकर्षण रहता है। उपर्युक्त सभी तत्त्वों के कारण यह मंदिर अन्य मंदिरों की अपेक्षा सर्वाधिक पर्यटकों के आगमन का केन्द्र है। इस मंदिर परिसर की स्वच्छता साथ ही खुला बाहरी परिसर (विदेशों में स्थित मंदिरों से समानता) के कारण पर्यटकों की ओर से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है।

मोती डूंगरी के गणेश जी मंदिर

जयपुर शहर के मध्य में मोती डूंगरी की तलहटी में बिरला मंदिर के समीप अवस्थिति, एयरपोर्ट से नजदीकी, यातायात के साधनों से जुड़ाव इसे पर्यटकों हेतु अभिगम्य बनाती है। इस मंदिर में स्वदेशी पर्यटक तो बड़ी संख्या में आते है परन्तु विदेशी पर्यटकों की संख्या बहुत कम है क्योंकि टूर–ऑपरेटर्स के कार्यक्रम में यह मंदिर विदेशी पर्यटकों हेतु काफी कम उपलब्ध रहता है। विदेशी पर्यटकों की वैष्णववाद विशेषकर श्रीकृष्ण के मंदिरों में रूचि अपेक्षाकृत ज्यादा है। इस मंदिर की विशेष स्थापत्य नहीं है।

गोविन्द देव जी मन्दिर

पुराने जयपुर शहर के मध्य में सिटी पैलेस के पीछे जयनिवास बगीचे के मध्य में स्थित होने के कारण सिटी पैलेस देखने वाले पर्यटक इसका भी भ्रमण करते हैं। यह विश्वप्रसिद्ध वेदांत के गौडीय संप्रदाय का मन्दिर है। यह एकमात्र मंदिर है, जिसकी अपनी वेबसाइट है। वेबसाइट पर ऑनलाइन दर्शन, ई–पूजा, झाकियाँ तक उपलब्ध हैं, जिससे पर्यटकों को यहाँ होने वाले कार्यक्रमों के बारे में निरन्तर जानकारी मिलती रहती है। यह मन्दिर न केवल धार्मिक परम्पराओं को प्रदर्शित करता है अपितु यहाँ वर्ष में कई अवसरों जैसे फागोत्सव (होली), कृष्ण जन्माष्टमी पर लोकनृत्य, लोकसंगीत, लोकनाट्यों का आयोजन होता है। उपर्युक्त संपूर्ण धार्मिक संस्कृति के कारण बिरला मंदिर के पश्चात यह मंदिर जयपुर में सर्वाधिक पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है।

गलता जी का मंदिर

गलता जी मंदिर परिसर पर्यटकों के सामने संपूर्ण पर्यटन दृश्य (धार्मिक व प्राकृतिक) प्रस्तुत करता है परन्तु जयपुर शहर की बाहरी सीमा पर इसकी अवस्थिति व यातायात के साधनों की कमी इसकी पर्यटकों हेतु अभिगम्यता को कम कर देती है, जिसके कारण यहाँ अपेक्षाकृत कम पर्यटक आते हैं। यह मंदिर टूर ऑपरेटर्स के कार्यक्रम में विदेशी पर्यटकों हेतु कम उपलब्ध हैं। मंदिर परिसर की गंदगी और रख–रखाव के अभाव के कारण पर्यटकों की प्रतिक्रिया नकारात्मक रहती है परन्तु पर्यटकों से साक्षात्कार के दौरान प्राप्त प्रतिक्रिया यह प्रदर्शित करती है कि इस मंदिर परिसर में अन्य मंदिरों की अपेक्षा सर्वाधिक पर्यटन संभाव्यता (Tourism Potential) है।

शिलादेवी का मंदिर

आमेर के राजप्रासाद के जलेब चौक के दक्षिण–पश्चिम कोने में शिलादेवी का मंदिर है। आमेर के राजप्रसाद में स्थित होने के कारण राजप्रसाद का भ्रमण करने वाले पर्यटक इस मंदिर का भी भ्रमण करते हैं।

जगत् शिरोमणी मन्दिर, आमेर

यह मंदिर आमेर के किले के पास मैदानी क्षेत्र में स्थित है। श्रीकृष्ण और मीरा को समर्पित इस मंदिर का स्थापत्य प्राचीन भारतीय मंदिर शैली को प्रदर्शित करता है। उपर्युक्त दोनों तत्व पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करते है। परन्तु प्रचार–प्रसार के अभाव व गाइडों की कम रूचि के कारण यहाँ पर्यटक आगमन कम है। परन्तु इस मंदिर के स्थापत्य के प्रति पर्यटकों की प्रतिक्रिया उत्साहपूर्ण है। यहाँ पर्यटन विकास की अधिक संभाव्यता है।

परिकल्पनाओं की सम्पुष्टि

अधिक अभिगम्यता (मैदानी क्षेत्र में अवस्थिति, यातायात के साधनों से जुडाव, सड़क जाल) स्थापत्य की

उत्तर भारतीय मंदिर शैली, वैष्णववाद विशेषकर श्रीकृष्ण के मंदिर, टूर ऑपरेटर्स के कार्यक्रम में इनकी उपलब्धता, ब्रांडिंग (मंदिरों व इनके कार्यक्रमों का ऑनलाईन प्रचार–प्रसार) पर्यटकों की संख्या में वृद्धि करते हैं। वही कम अभिगम्यता (दूरस्थ व पहाडी अवस्थिति, यातायात के साधनों से जुड़ाव की कमी) प्रचार–प्रसार, सरकारी प्रोत्साहन का अभाव, अस्वच्छता पर्यटक आगमन को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं। इस तरह हमारी परिकल्पना की सम्पुष्टि होती है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त मंदिरों के भौगोलिक – सांस्कृतिक विश्लेषण से निम्न अन्य निष्कर्ष प्राप्त होते हैं :–

1. जयपुर शहर में कई प्रसिद्ध मंदिर हैं परन्तु इन्हीं 6 मंदिरों में पर्यटकों का सर्वाधिक आगमन होता है क्योंकि ये सभी मंदिर पुराने जयपुर शहर में या उसके नजदीक स्थित है जिससे स्थापत्य के दृष्टिकोण से प्रसिद्ध महलों, इमारतों का भ्रमण करने वाले पर्यटक इन मंदिरों का भी भ्रमण करते हैं।
2. ये मंदिर लोक कलाकारों को अपनी लोक कलाओं का प्रदर्शन करने का एक मंच प्रदान करते हैं। वर्तमान में हमारी लोक कलाएँ लुप्त होती जा रही है ऐसे में ये मंदिर जयपुर जनपद की सांस्कृतिक संधारणीयता (Cultural Sustainability) में भी सहायक है।

समस्याएँ

1. मंदिरों में अवसर विशेष पर भीड में पर्यटकों के साथ होने वाले अपराध।
2. मंदिर परिसर में उपस्थित गंदगी पर्यटकों के मानस पर नकारात्मक प्रभाव डालती है।
3. सरकारी प्रोत्साहन की कमी या सरकारी योजनाओं का अत्यंत धीमी गति से क्रियान्वयन।

सुझाव

1. जिस तरह स्थापत्य के दृष्टिकोण से प्रसिद्ध इमारतों का रख–रखाव और प्रचार–प्रसार किया जाता है, वैसे ही मंदिरों का भी रख–रखाव और प्रचार–प्रसार होना चाहिए।
2. प्रत्येक मंदिर की अपनी ऑनलाइन वेबसाइट और उस पर मंदिर में होने वाली प्रत्येक गतिविधि की सम्पूर्ण जानकारी होनी चाहिए।
3. मंदिर परिसर का माहौल स्वच्छ और सुरक्षित होना चाहिए। ताकि स्थानीय लोग और पर्यटकों की अंतर्क्रिया की अधिकतम सम्भाव्यता बने।
4. सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन त्वरित गति से होना चाहिए।

उपर्युक्त सभी समस्याओं का समाधान करते हुए मंदिरों के संदर्भ में सांस्कृतिक पर्यटन की संभावनाओं को अधिकतम किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *प्रभाकर, मनोहर (1972): कल्चरल हैरिटेज ऑफ राजस्थान, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ.स. 15, 55–57*
2. *सिंह, महेन्द्र (1991) : राजस्थान में पर्यटन उद्योग अभी बाकी है कनिष्का पब्लिकेशन्स,नई दिल्ली,पृ.स. 58–60, 80*
3. *शर्मा, एच.एस. शर्मा, एम.एल. (2010) : राजस्थान का भूगोल, पंचशील प्रकाशन, जयपुर, पृ.स. 252*
4. *शर्मा, जे.पी. (2012) : प्रायोगिक भूगोल, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ, पृ.स. 624, 630–632*
5. *शर्मा,गोपीनाथ (1989) : राजस्थान का सांस्कृतिक इतिहास, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी,जयपुर,पृ.स. 8–10*
6. *गुप्ता, मोहनलाल (2015) : जयपुर संभाग का जिलेवार सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक अध्ययन, पृ.स. 69–74, 110–114, 116, 121–122*
7. *सक्सेना, एच.एम. (2005) : परिवहन भूगोल, रावत पब्लिकेशन्स्, पृ.स. 67,70,76*
8. *पर्यटन विभाग, राजस्थान (2016) : प्रगति प्रतिवेदन, (2015–2016), पृ.स. 49–51*
9. *पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार (2016–17): स्वदेश दर्शन स्कीम रूपरेखा, पृ.स. 1–2*
10. *ग्रैफे, जेवियर (2002) : "Managing our cultural Heritage", Aryan Books International, New Delhi पृ.स.– 88-91*
11. *गुप्ता, एस.पी., कृष्ण लाल, भट्टाचार्य, महुआ (2010) : Cultural Tourism in India Museums, monuments & Art (Theory and Practice), D.K. Printworld (P) Ltd पृ.स.–201, 294*
12. *उदय, वनाजा (2012) : Cultural Tourism and Performing arts of Andhrapradesh : Prospects and Perspectives, Research India Press, New Delhi, पृ.स.–188–192*
13. *तिमोथी, डैलन जे (2011) : Cultural Heritage and Tourism : An Introduction (Aspects of Tourism Texts), Channel View Publications, UK, USA, Canada, पृ.स.–384, 385, 390, 395*
14. *काटसोनी, विकी (2015) : "Cultural tourism in a digital era" first international conference IACuDIT, Athens, 2014, Springer International Publishing, Switzerland, पृ.स.–121–130*
15. *राज, रजाक ग्रिफिन केविन (2015) : Religious tourism and Pilgrimage Managment : An International perspective IInd Edition, CAB International, UK, USA, पृ.स.–103–117*